~~कर्मप्रवचनीया~~

कर्मप्रवचनीयाः इत्यधिकृत्य ।।

कर्म प्रवचनीयाः इस सूत्र का अधिकार करके ।

अनुर्लक्षणे ।

लक्षणे द्योत्ये अनुरुक्तसंज्ञः स्यात् ।
गत्युपसर्गसंज्ञापवादः ।

लक्षण अर्थ द्योतित होने पर अनु कर्मप्रवचनीय संज्ञा हो । यह सूत्र गति और उपसर्ग संज्ञा का अपवाद है।

कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ।

एतेन योगे द्वितीया स्यात् । जपमनुप्रावर्षत् । हेतुभूतजपोपलक्षितं वर्षणमित्यर्थः । परापि हेता विति तृतीयाऽनेन बाध्यते । लक्षणेत्थंभूतेत्यादिना सिद्धे पुनः संज्ञाविधान सामर्थ्यात् ।।

'जपमनुप्रावर्षत्' इस उदाहरण में में 'अनुर्लक्षणे' से अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

अस्मिन द्योत्ये तृतीयार्थे अनुरुक्तसंज्ञः स्यात् ।
नदीमन्ववसिता सेना । नद्या सह सम्बद्धेत्यर्थः
सिनः बन्धने क्तः ।

तृतीया का अर्थ द्योतित होने पर अनु कर्मप्रवचनीय संज्ञक हो।
नदीमन्ववसिता — इस उदाहरण में अनु तृतीया के अर्थ का द्योतक है। सेना नदी के साथ सम्बद्ध है। यह इसका अर्थ है।

हीने।

हीने द्योत्ये अनुः प्राग्वत्। अनु हरिं सुराः हरेर्हीना इत्यर्थः।

हीन अर्थ द्योतित होने पर 'अनु' कर्मप्रवचनीयसंज्ञक हो। कर्मप्रवचनीय संज्ञा होने पर अनु के योग में। कर्मप्रवचनीय युक्ते द्वितीया इससे 'हरिम' इसमें द्वितीया होती है।

~~उपोऽधिके~~

उपोऽधिके च।

अधिके हीने च द्योत्ये उपेत्यव्ययं प्राक् संज्ञं स्यात्। अधिके सप्तमी वक्ष्यते। हीने — उप हरिं सुराः।

अधिक और हीन अर्थ द्योतित होने पर 'उप' यह अव्यय कर्मप्रवचनीयसंज्ञक हो। अधिक अर्थ में सप्तमी कही जायगी। सप्तमी के प्रसंग में (उपपरार्धे हरेर्गुणाः) इस वाक्य में — हीन अर्थ में — उप हरिं सुराः यह उदाहरण है। सुर हरि से हीन है।

लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः

एष्वर्थेषु विषयभूतेषु लक्षणे – वृक्षं प्रति परि अनु वा विद्योतते प्रत्यादय उक्तसंज्ञाः स्युः विद्युत् । इत्थंभूताख्याने – भक्तो विष्णुं प्रति परि अनु वा । भागे लक्ष्मीर्हरिं प्रति अनु वा । वीप्सायाम् – वृक्षं वृक्षं प्रति पर्यनु वा सिञ्चति । अत्रोपसर्गत्वाभावान्न षत्वम् । एषु किम् ? परिषिञ्चति ।

लक्षण, इत्थंभूताख्यान, भाग और वीप्सा- इन अर्थों के विषयभूत होने पर प्रति, परि और अनु ये शब्द कर्मप्रवचनीय संज्ञक हों । लक्षण अर्थ में – वृक्षं प्रति परि – इत्यादि उदाहरण में 'वृक्ष की दिशा में, वृक्ष के सब ओर या वृक्ष के पीछे बिजली चमक रही है' यह उदाहरण का अर्थ है । इत्थम्भूताख्यान बताने में अर्थ में – यहाँ भक्तो विष्णुम् इत्यादि उदाहरण में भक्त विष्णु की दिशा में है (विष्णु के सम्मुख है), विष्णु के सब ओर है तथा विष्णु के पीछे है अर्थात् अनुगामी है । भाग अर्थ के उदाहरण का अर्थ यह होगा – लक्ष्मी हरि की दिशा में, हरि के सब ओर तथा हरि के पीछे है ।

अभिरभागे ।

भागवर्जे लक्षणादौ अभिरुक्तसंज्ञः स्यात् । हरिमभि वर्तते । भक्तो हरिमभि । देवं देवमभि सिञ्चति । अभागे किम् ? यदत्र ममाभिः स्यात् तद्दीयताम् ।।

अधिपरी अनर्थकौ ।

उक्तसंज्ञौ स्तः । कुतोऽध्यागच्छति । कुतः पर्यागच्छति । गतिसंज्ञाबाधात् गतिर्गतौ इति वा

अनर्थक अधि और परि अलग कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते हैं। कुतोऽध्यागच्छति तथा कुतः पर्यागच्छति इन उदाहरणों में अधि और परि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होने से गतिसंज्ञा का बाध हो जाता है। अतः 'गतिर्गतौ' इस सूत्र से अधि और परि में अनुदात्तत्व नहीं होता। यहाँ अधि और परि वाक्य में किसी अर्थविशेष के द्योतक न होने से अनर्थक ही प्रयुक्त हैं। उनकी कर्मप्रवचनीय संज्ञा का फल तो गतिसंज्ञा का बाध है और उसका फल है अनुदात्तत्व विधायक 'गतिर्गतौ' सूत्र की यहाँ अप्रवृत्ति।

सुः पूजायाम्। अनुपसर्गत्वान्न षः। सु सिक्तम्। सु स्तुतम्। किं तवात्र। सोऽयम्॥ सु सिक्तं किं पूजायां किम्? सु कर्मप्रवचनीय संज्ञक हो। सु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होने से उपसर्ग संज्ञा का बाध हो गया, अतः उपसर्गत्व के अभाव से सुसिक्तम् तथा सुस्तुतम् इन उदाहरणों में 'उपसर्गात् सुनोति' से षत्व की प्रवृत्ति नहीं होती।

अतिरतिक्रमणे च। आतिः कर्मप्रवचनीय संज्ञः स्यात्। अतिक्रमणे पूजायां च अति देवान् कृष्णः॥ अतिक्रमण और पूजा अर्थ में अति कर्मप्रवचनीय संज्ञक हो। इसमें कर्मप्रवचनीय संज्ञा के कारण अति के योग में 'देवान्' इसमें 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है।

कुत्सदेवों का अतिक्रमण किये हुए हैं। क्योंकि वे अधिक शक्तिशाली हैं। अथवा कुत्स देवों के पूज्य हैं, क्योंकि वे अपने लोकातिशायी गुणों के कारण उनके आदर के पात्र हैं। यह उदाहरण का अर्थ है।

अपिः पदार्थसंभावनाऽन्ववसर्ग गर्हा समुच्चयेषु।

एषु द्योत्येषु अपिरुक्तसंज्ञः स्यात्। सर्पिषोऽपि स्यात्। अनुपसर्गत्वान्न षः। संभावनायां लिङ्। तस्या एव विषयभूते भवने कर्तृदौर्लभ्यप्रयुक्तं दौर्लभ्यं द्योतयन् अपिशब्दः स्यादित्यनेन सम्बध्यते। सर्पिष इति षष्ठी तु अपिशब्दबलेन गम्यमानस्य बिन्दोरवयवावयविसम्बन्धे। इयमेव ह्यपिशब्दस्य पदार्थद्योतकता नाम। द्वितीया तु नेह प्रवर्तते, सर्पिषो बिन्दुना योगो न त्वपिना। इत्युक्तत्वात्। अपि स्तुयाद् विष्णुम्। संभावनं शक्त्युत्कर्षमाविष्कर्तुम अत्युक्तिः। अपि स्तुहि। अन्ववसर्गः कामचारानुज्ञा। धिग् देवदत्तमपि स्तुयाद् वृषलम्। गर्हा। अपि सिञ्च। अपि स्तुहि। समुच्चये॥

कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ।

अत्यन्त संयोगे कालवाचकाद् मार्गवाचकाच्च शब्दात् द्वितीया स्यात् । मासं कल्याणी । मासमधीते । मासं गुडधानाः । क्रोशं कुटिला नदी । क्रोशमधीते । क्रोशं गिरिः । अत्यन्तसंयोगे किम् ? मासस्य द्विरधीते । क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः ।

कालवाचक और मार्गवाचक शब्द से द्वितीया हो अत्यंत संयोग में । उक्त प्रथम तीन उदाहरणों में (मासं कल्याणी आदि में) मास शब्द कालवाचक है । उससे अत्यंत संयोग में द्वितीया हुई है । बाद के तीन उदाहरणों में कोश शब्द मार्गवाचक है । उससे भी अत्यंत संयोग में द्वितीया हुई है । मासम् अर्थ मासभर तथा क्रोशम् का अर्थ कोसभर या कोस तक है ।

क्रोशं गिरिः — एक कोस तक लगातार पहाड़ है । इसी प्रकार — मासमधीते वेदं छात्रः । क्रोशमधीते स्तोत्रं यात्री । सप्ताहं भागवतं पक्षं पठति गीतां सः । मासं सेवां वाञ्छति पण्डितः । पथो मया । गव्यूतिं सरलो मार्गः, वक्र आस्ते ततः परम् । गव्यूतिम् — दो कोस तक । वक्रः — टेढ़ा । शैलस्य श्यामलाः श्रेणयो वर्तन्ते योजनं पुरः । सामने पर्वत की श्यामल श्रेणियाँ योजन चार कोस तक दिखाई बराबर विद्यमान हैं । क्रोशार्धं संप्रवर्तन्ते सुन्दर आपणपङ्क्तयः — आधे कोस तक निरंतर सुन्दर दुकानों की पंक्तियाँ हैं । अत्यन्तसंयोगे किम् ? यह ग्रंथकार प्रश्न करता है । उत्तर देता है — मासस्य द्विरधीते । क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः । यदि 'अत्यन्तसंयोगे' का सूत्र में ग्रहण न होता तो उक्त उदाहरणों में भी द्वितीया हो जाती । अनभीष्ट है जो नहीं होती, क्योंकि षष्ठी के स्थान में अत्यन्त संयोग ग्रहण करने पर है तथा मास में केवल दो बार पढ़ता है तथा क्रोश के एक भाग में पर्वत है । इन वाक्यों में काल और मार्ग से निरंतर संयोग नहीं है । अत्यन्त का वस्तु या क्रिया से निरंतर लगातार स्थित है तथा एक भाग में दो बार है । अत्यन्त संयोग वस्तु क्रोश है एक भाग में संबंध हुआ, व्याप्ति संबंध । यह संबंध अभाव से भी जानना चाहिए, का अर्थ है व्याप्तिरूप संबंध । यह संबंध अभाव अत्यन्ताभावः इत्यादि तथा क्रिया से होता है । मास नाधीते । मासम् प्रयोग देखने हैं ।